गुरुवाणी

विश्वास करना प्रारम्भ कीजिये चारों ओर उत्साह और प्रसन्नता ही दिखेगी। जीवन विविध रंगों से परिपूरित होगा।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

No-G-2/VSI (E)-04/2016-18

वर्ष-१६, अंक १, वाराणसी। शुक्रवार १५ जनवरी २०१६ ई० सहयोग राशि ४.२५

नारी

सौभाग्य से इस वसुन्धरा के हम उस भूभाग के निवासी है जिसे आर्यावर्त्त नाम दिया गया है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग में भी पौराणिक काल तक हमारे यहाँ नारी को देवी के स्वरूप में प्रतिष्ठित किया गया है एवं कहा गया है कि- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ति तत्र देवता'' अर्थात् जहाँ शक्ति की प्रतिष्ठा या पूजा होती है वहीं देवत्व का वास होता है। इसलिये माँ दुर्गा एवं शक्तिस्वरूपा सर्वेश्वरी की आराधना के लिए वर्ष में नियमित रूप से दो नवरात्र भी मनाये जाने की परम्परा है। नवरात्र काल की अवधि में अपनी संस्कृति के अनुसार हम व्रत, उपवास, पूजा-पाठ को बढ़ाते हुए अपने विकारों को समूल नाश करने हेतु उद्यत होते हैं। नारी वह ईश्वरीय शक्ति है जिससे सृष्टि का संचालन अबाध गति से होता आया है तथा नर एवं नारी सृष्टि रथ के दो पहिये हैं जिससे समाज में दोनों का ही अस्तित्व बरकरार रहना, दुरुस्त रहना प्राथमिक आवश्यकता है। यानी हम कह सकते हैं कि मूल रूप से नर एवं नारी ही सम्पूर्ण मानवता की दो जातियाँ हैं। जिन्हें प्रकृति ने सृष्टि के संचालन हेतु स्वयं रचा है। ऐसे में एक भाग यानी नारी समाज की किसी प्रकार अवहेलना, किसी प्रकार उपेक्षा अक्षम्य एवं विस्मयादि पूर्ण है। हम सभी अवगत है कि ''शब्द माँ'' से बढ़कर मानव के लिए कुछ भी नहीं है। इसीलिये बीसवीं सदी के प्रचंड अघोर संत परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी ने सन् १९६१ में समाज के कल्याण हेतु **''सर्वेश्वरी समूह''** की स्थापना की। जिसमें शक्ति की सर्वोच्च पुंज सर्वेश्वरी का ही अवलम्बन लिया गया है। इसलिये सर्वेश्वरी समूह में नारी समूह को विशेष सम्मान प्रदान किया जाता है। ''माँ गुरु'' के रूप में स्वयं अघोरेश्वर ने समस्त समाज को यह संकेत दिया है कि मात्र शक्ति में शान्ति समाहित है। सृष्टि संचालन के उद्भव का यही उद्गम है। अस्तु नारी उत्कर्ष हेतु अनेकानेक कार्यक्रम समय-समय पर समूह द्वारा चलाया जाता रहा है। समूह के १९ सूत्रीय कार्यक्रम में भी दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, नशाखोरी इत्यादि के समूल नाश हेतु कार्यक्रम चलाये गये हैं। भारत सरकार द्वारा भी ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं'' अभियान प्रारम्भ किया गया है। साथ ही नागरिकों को **''डाटर विद सेल्फी''** के साथ अपने को गौरवान्वित महसूस करने तथा बेटी के जन्म को भी उत्सव की भांति मनाने की प्रेरणा प्राप्त हो रही है।

परन्तु, विडम्बना है कि आज भी हमारा यह विकासशील राष्ट्र भारतवर्ष नारी के प्रति अत्याचार में विश्व में ऊपर से चौथे पादान पर खड़ा है। हमारे देश में स्त्रियाँ दहेज हेतु न केवल जीवित जलायी जा रही है बल्कि विभिन्न स्थितियों परिस्थितियों में उनके शक्ल पर तेजाब का भी आक्रमण आम हो गया है जिसकी रोकथाम के लिये अलग से भारत सरकार को कानून तक बनाना पड़ा है। भ्रूण हत्या हेतु भी आये दिन रेडियोलॉजिस्ट चिकित्सों के चैम्बर पर लिंग परीक्षण किया जाना कानून अपराध है, का निष्प्रभावी बोर्ड लगा है। यह स्थिति आज २१सदीं के दूसरे दशक की है जब हम विकासवादी होने का स्वांग भरते हुए वैज्ञानिकता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। दिनोंदिन साक्षरता के प्रतिशत में वृद्धि हो रही है। लेकिन बालक एवं बालिकाओं का लिंगानुपात काफी भयावह स्थिति प्रकट कर रहा है। हर वर्ष औसतन बालकों के अपेक्षा बालिकाओं की जन्म दर में गिरावट आती जा रही है। आखिर ऐसी नौबत क्यों आयी? जबकि हमारा यह देश देवी-देवताओं के प्राकट्य का स्थान रहा है तथा हमारी संस्कृति में जननी एवं नारी को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इसका एकमात्र विशेष कारण पुरुष वर्ग द्वारा प्रारम्भ से ही अपने सहभागी महिला वर्ग के प्रति भेदभाव एवं अत्याचार भरा दृष्टिकोण रहा है। इसीलिये प्रारम्भ से ही नारियों में शिक्षा की कमी, कुपोषण की स्थिति, सामाजिक स्तर पर भेदभाव व्याप्त रहा है। इतिहास साक्षी है कि बंगाल में राजाराम मोहन राय द्वारा किन-किन कठिनाईयों से पूरे राष्ट्र में सती प्रथा का अन्त किया गया। जबकि उस काल में बाल विवाह का ही प्रचलन अत्यधिक था। यद्यपि नारी ही नर की जीवनदात्री है। यहाँ तक कि उदारवादी कहे जाने वाले यूरोप के कई देशों में भी पूर्व काल में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर दर्जा प्राप्त नहीं था। मध्यकालीन युग में बर्बर आक्रमणकारी जब किसी साम्राज्य को विजित कर लेते थे तो अन्य असबाबों, पशुओं के साथ ही स्त्रियों की भी गिनती की जाती थी। राजस्थान के चित्तौड़ में पद्मिनियों ने इसी अपमान से बचने के लिये सामूहिक रूप से ''जौहर'' कर लिया था। स्त्री वर्ग के प्रति भेदभाव एवं उचित सम्मान के अभाव का कारण समाज में पितृसत्तात्मकता ही रही है। यद्यपि नारी समाज के इस स्थिति तक पहुँचने की यदि हम समीक्षा करें तो उसमें प्रभावकारी योगदान पुरुष वर्ग के साथ नारी का भी कम नहीं है। विगत वर्षों की घटना है जब पाकिस्तान की बाला यूसुफ जलालामई को शिक्षा ग्रहण करने के अधिकार से वंचित करने के लिये कठमुल्लों द्वारा बर्बर आक्रमण कर मृत्यु तुल्य कष्ट पहुँचाया गया जिससे विश्व स्तर पर मानवता शर्मसार हुई। अन्ततः उस बाला को स्वस्थ होने पर सर्वश्रेष्ठ नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया। यद्यपि आज भी यूसुफ जलालामई विदेश में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रही है। हमारे भारत देश में भी जिस प्रकार कुछ वर्ष पहले बलात्कार पीड़ित निर्भया की दिल्ली में निर्मम हत्या की गयी तथा समस्त राष्ट्र मर्माहत हो एकजुट हुआ एवं अन्ततः नाबालिग किशोर के भी अपराध हेतु कानून में बदलाव किये जाने की पहल की गयी। परन्तु स्थिति में आज भी आशाजनक परिवर्तन नहीं आ पाया है। इससे सिद्ध होता है कि इस भयावहता के बावजूद हम अभी भी नारी, बालिकाओं के प्रति संवेदनशील नहीं हो सके है। हमारी जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग मद्यपान, अन्यान्य सामाजिक परिस्थितिवश ऐसे-ऐसे यौन अपराध करता है, जिसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसलिये आज हमारे राष्ट्र में नारी सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है। ताकि इस कलंक के अपराध का ग्राफ कम हो। परन्तु दुर्भाग्य है कि आज भी क्रूर छेड़छाड़ से हमारी आधी आबादी महफूज नहीं है।

परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी द्वारा ''अघोर वचन शास्त्र'' में ''नारी'' शीर्षक अध्याय में नारियों की बेबाक स्थिति का विवेचन किया गया है। उक्त अध्याय के अध्ययन से स्पष्ट है कि प्रकृति के द्वारा स्त्रियों को नैसर्गिक रूप में भावुकता का उपहार प्रदान किया गया है। इसीलिये माता-पिता के स्वभाव में अन्तर होता है। हमारी समाज की कुछ कुत्सित मानसिकता के पुरुष वर्ग के द्वारा महिलाओं, बालिकाओं की अशिक्षा कुपोषण, दुर्बलता, आर्थिक विपन्नता का लाभ उठाकर उन्हें घिनौने कार्य हेतु मजबूर किया जाता है। जो अत्यन्त

शेष पृष्ठ दो पर

अघोर स्वर-लहरी

कहा जाता है कि विद्या की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती द्वारा सर्वप्रथम संगीत विद्या में राग-रागनियों की रचना की गई जिसे वीणा के माध्यम से नारद जी द्वारा रामकल के रूप में गाकर प्रचारित किया गया। भगवान श्रीकृष्ण के अधर सुधा रस का पान करने वाली बाँसुरी से संगीत निकलता था जो गोपिकाओं के साथ वृषभानु नन्दिनी राधा रानी को भी अप्रतिम प्रेम रस में डुबो देता था। पौराणिक काल से ही छंदों, काव्यों के माध्यम से भक्तों ने अपने को सर्वशक्तिमान से साथ जोड़ा है। इसीलिये देवताओं एवं देव स्थानों में आरती के समय वाद्य यंत्रों के साथ संगीत के लय का हम मिश्रण देखते हैं, यदि अनुशासनबद्ध होकर विशेष अवसरों पर हम एक लय में घंटा, घड़ियाल, शंख ध्वनि को निकालते हैं तो उससे एक सरस वातावरण का निर्माण होता है, जिसका प्रभाव उपस्थित श्रोतागण के मन मस्तिष्क एवं शरीर पर सीधे पड़ता है, जिससे उनमें सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा नकारात्मक ऊर्जा शरीर से बाहर हो जाती है, जिससे मानव को चैन शान्ति की प्राप्ति होती है इसके विपरीत बिना लय के, बिना अनुशासन के वाद्य यंत्रों की ध्वनि या गीत संगीत हमें दुष्प्रभावित भी करता है उसका ज्वलन्त प्रमाण पाश्चात्य संगीत का बढ़ता पाप की कर्कश म्यूजिक हमें उद्वेलित कर रक्तचाप को बढ़ा देती है।

सुमधुर लोरियाँ सुनाकर बच्चों को मातायें सुला देती हैं बच्चों को अपूर सुख की प्राप्ति होती है। सुमधुर संगीत सुनकर व्यक्ति का मन मयूर एकाग्र हो मग्न हो जाता है, देवी गीत गाकर हमारी ग्रामीण महिलायें ईश्वरत्व की प्राप्ति करती है, जो भजन, स्तुतियाँ, आरती गायी, सुनायी जाती है, उनका प्रभावशाली प्रभाव श्रोतागण अथवा गायक के जीवन में अवश्य पड़ता है। जिससे जीवन शैली सुरम्य, बाधा रहित होती है, मन के तारों को झंकृत करने वाला संगीत न केवल हमें स्वस्थ मनोरंजित करता है बल्कि गीत से जीवन के अभावों को दूर किया जा सकता है। संगीत स्वर प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत कर देता है। समवेत स्वर से ''हर हर महादेव'' के उच्चारण में भी एक लय होती है जिसे सामूहिक रूप से चित्त एकाग्र हो जाता है शक्ति सम्वर्द्धन होता है। उस परम अज्ञात से बड़े ही आसानी से उद्बोधकों, जयकारा करने वालों का तार जुड़ जाता है जिससे उन्हें असीम सुकून की प्राप्ति होती है। इसीलिए अघोरेश्वर की कृपा हेतु न केवल सम्बन्धित स्थलों, आश्रमों, देवालयों में संगीत भजन की पुरानी परम्परा कायम है बल्कि अघोर भक्तों के घरों में भी नियमित रूप से लय में आरती का गायन असीम संतुष्टि प्रदान करता है, जिससे हमारे शरीर की बायोलाजिकल क्रियायें यानी चपाचयी क्रियाओं पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। फलतः हमारे चेहरे की कांति खिल उठती है। अघोरेश्वर बाबा कीनाराम स्थल में बाबा की समाधि पर या औघड़ गद्दी पर उपलब्ध बाबा कीनाराम के दरबार में अघोराचार्य बाबा बीजाराम जी द्वारा वाद्ययंत्र वीणा बजाते हुए उनकी छवि पारम्परिक अघोर संगीत प्रेम एवं अघोर निनाद को स्वतः सिद्ध करती है जिससे सदियों से मानव समाज के मन मस्तिष्क को त्राण मिलता रहा है एवं सहज में ही मानसिक शांति, सौहार्द एवं परस्पर प्रेम की भावना बलवती विकसित होती है। इसलिए हर औघड़ पर्व खासकर ''१० फरवरी महानिर्वाण एवं अभिषेक दिवस'' ''गुरुपूर्णिमा'' एवं ''लोलार्क षष्ठी'' समारोह के अन्तर्गत एकत्रित अघोर भक्तों को सायं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत गीत संगीत, भजन की स्वर लहरियों के आनन्द में गोता लगाने का अवसर प्रदान किया जाता है। दूसरी ओर गायक अथवा संगीतिज्ञ भी स्थान विशेष पर अपनी कला का प्रदर्शन कर एक अपूर्व सुख की प्राप्ति करते हैं तथा उनके हृदय में यह विश्वास घर करता है कि उनकी संगीत साधना पूर्ण हुई। वे अब विश्व के कोने-कोने में संगीत का अलख जगाने हेतु सक्षम बनकर अपार शोहरत एवं दौलत के स्वामी बन जाते हैं तथा अपने फन के नवीनीकरण हेतु नयापन हेतु, पुनः ऐसे अवसर की तलाश में रहते हैं ताकि स्थान विशेष पर अपने हुनर को निखार कर चार चांद लगाते हैं। सौभाग्य से पूज्यपाद बड़े सरकार के साथ ही वर्तमान पीठाधीश्वर जी द्वारा नवोदित कलाकारों को उत्साहित कर उन पर आशीष की निरन्तर वर्षा की जाती है जिससे वे सदा सर्वदा श्रीचरण की आभा से प्रगति की ओर उन्मुख होकर अभीष्ट की प्राप्त करते रहते हैं।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

नारी

घृणित एवं निन्दनीय कार्य की श्रेणी में आता है। बेबस, बिचारी, लाचार अबला पुरुषों के अत्याचार का शिकार बनती आयी है एवं उसे भरपूर जीवन जीने के लाभ से भी वंचित रखा जाता है। हमारे समाज में आये दिन पति द्वारा या उनके परिवारजन द्वारा पत्नी को प्रताड़ित किया जाना आम बात है। जो बंधे हुए पशु को प्रताड़ित करने के सदृश हैं जबकि प्रारम्भ से ही हमारे भारतीय समाज में नारी को घर परिवार बच्चों की परवरिश तक सीमित कर उन्हें आभूषणों से आच्छादित कर अपने इज्जत, मर्यादा, सम्मान की वस्तु बनाकर समाज में प्रस्तुत किया गया है। इस परम्परा को चुनौती देते हुए आधुनिक कवियत्री अंजु शर्मा कहती हैं—

लोग कहते हैं जंगली गुलाब हैं बेटियाँ।
परिजन कहते हैं दर्द की किताब हैं बेटियाँ।
पिता कहते हैं इज्जतो-आब हैं बेटियाँ।
अब समय कहता है इंकलाब हैं बेटियाँ।

जबकि प्रकृति के द्वारा विशेष कार्य के क्रियान्वयन हेतु नारी की शारीरिक बनावट, शारीरिक बल, देहयष्टि की तदनुसार रचना की गयी है। जबकि पुरुषों में मात्र शारीरिक बल की क्षमता स्त्रियों की अपेक्षा उसके कार्यानुरूप अधिक होती है। प्रकृति ने स्त्री को असीम प्रसव पीड़ा सहकर भी सृजन की शक्ति प्रदान किया है। नारीत्व को प्रकृति ने क्षीर भी प्रदान किया है जो मानव का प्रथम पान है। परन्तु यह अफसोस जनक है कि आज हमारे बीच की हमारी शक्तियाँ यानी बहनें, बेटियाँ पाश्चात्य सभ्यता से आकर्षित होकर अनावश्यक तड़क भड़क में अपनी संस्कृति से विमुख हो गयी हैं। यह बीमारी महानगरों में महामारी की तरह फैल रही है। जहाँ रात्रि पर्यन्त बार बालाओं का नृत्य एवं नाईट क्लबों में समाज की पढ़ी लिखी नवधनाढ्य वर्ग के पुरुष **''वाइफ स्वैपिंग''** जैसे कुरीति को ग्रहण करते जा रहे हैं। हम कहाँ थे और कहाँ चले आयें। महानगरों में कार्यरत नारियाँ न केवल अपने कार्यस्थल पर अपमानित होती हैं बल्कि उन्हें अधनातुन न होने पर उन्हीं के मित्रों द्वारा उन्हें पिछड़ा समझा जाता है। दूसरी ओर, हमारे राष्ट्र में आनर किलिंग की घटनायें भी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। भारत राष्ट्र में नारी वर्ग के प्रति इस विकृति की जड़ बेतहाशा दौलत, काला धन, भ्रष्टाचार एवं मद्यपान में समाहित है। क्योंकि महिलाओं के कार्यस्थल पर आठ घंटा बीतना उनके लिये अहैतुकी समझा जाता है। यह स्थिति समाज में हमें कहीं का नहीं छोड़ती जिससे देश विदेश में हमारी साख गिरी है।

इन गिरते मूल्यों को रोकने के लिये हमारे ऋषि, मुनियों द्वारा बनायी गयी संस्कृति, मर्यादित आचरण की परम्परा ही एकमात्र सोपान है, जिसमें नारी शिक्षा, नारी स्वावलम्बन,

शेष पृष्ठ तीन पर

आमंत्रण

श्रद्धेय माताओं, बहनों एवं धर्म बन्धुओं!

अघोर गुरुपीठ बाबा कीनाराम स्थल अर्थात् क्रीं कुण्ड के 11वें पीठाधीश्वर बाबा श्री सिद्धार्थ गौतम राम जी का अभिषेक दिवस एवं ब्रह्मलीन पीठाधीश्वर बाबा राजेश्वर राम जी (बुढ़ऊ बाबा) का महानिर्वाण दिवस तथा सेवा संस्थान का स्थापना दिवस **दिनांक 10 फरवरी 2016, बुधवार** को परम्परागत ढंग से इस परम् पुनीत स्थली पर मनाया जायेगा।

इस अविस्मरणीय महोत्सव पर आप सभी अघोर भक्त सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम

1. प्रातःकालीन आरती के उपरान्त श्रमदान एवं सफाई कार्यक्रम तथा प्रभातफेरी।
2. प्रातः 8 बजे से पूज्य पीठाधीश्वर जी द्वारा समस्त समाधियों का पूजन एवं दर्शन।
3. पूर्वाह्न 9.30 बजे से श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य पीठाधीश्वर जी का दर्शन-पूजन।
4. दोपहर में प्रसाद वितरण।
5. सायंकाल 4 बजे से गोष्ठी एवं पूज्य पीठाधीश्वर जी का आशीर्वचन।
6. सायंकालीन आरती 7.30 बजे से प्रारम्भ।
7. रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम।

द्वितीय पृष्ठ का शेष

नारी

नारी सुरक्षा, नारी समता, नारी स्वास्थ्य आदि को बड़ा ही महत्व दिया गया है। यह भी स्पष्ट है कि आज के युग में कम से कम भारत में नारी उत्कर्ष अपरिहार्य है। केवल भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा कानून बना देने से इस संदर्भ में कोई प्रगति नहीं हो सकती जब तक इसके मूल कारणों पर कुठाराघात न किया जाय। नारी समाज के प्रति विकृत सोच का एक प्रभावी कारण समाज में बढ़ते मद्यपान का प्रचलन भी है। मद्यपान करने वाला गृहस्थ समाज का सामान्य व्यक्ति जंगली जानवर से भी खूंखार हो जाता है। दृष्टान्त स्वरूप इसी नववर्ष २०१६ के प्रारम्भ के अवसर पर जर्मनी जैसे उदारवादी देश की घटना विश्व को शर्मसार करने के लिए पर्याप्त है। जहाँ विपुल मात्रा में उपस्थित हुए युवक युवतियों के मध्य मद्यपान के नशे में धुत दर्जनों की संख्या में अलग-अलग टोलियों में युवकों द्वारा उपस्थित युवतियों के साथ बेहूदी हरकत एवं अश्लीलता की सीमा लांघी गयी जिससे मीडिया ने प्रसारित भी किया।

भारतवर्ष में मातृशक्ति के महत्व को सर्वोपरि रखा गया है। यहाँ तक कि भारतभूमि को भी जननी की संज्ञा इसलिए दी गयी है कि ताकि इसी धरती से हम प्रकार से पोषण पाते हैं। यानी 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की संज्ञा दी गयी है। सतजुग में हरिश्चन्द्र के साथ शैव्या की त्याग तपस्या की भूमिका वर्णित है। इसी प्रकार त्रेता में माता सीता के साथ सूपर्णखा एवं रानी कैकयी, तारा, मन्दोदरी आदि, द्वापर में कुन्ती, द्रौपदी, गान्धारी की भी भूमि अलग-अलग रही है। समय एवं काल के अनुसार कवियों ने भी नारी की स्थिति का वर्णन किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में कहा है—

कत विधि सृजी नारी जग माहीं।
पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं।।

महाकवि जयशंकर प्रसाद के अनुसार—

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नभ पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।''

जबकि महाकवि निराला जी की लेखनी स्त्री बेबसी पर बोल उठती है—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

यद्यपि आज हमारे समाज में नारियों ने अपने अस्तित्व की चुनौती को स्वीकार किया है। भारत स्तर की प्रतियोगिता परीक्षाओं में लड़कियाँ अव्वल आ रही है। विगत वर्ग भारतीय प्रशासनिक परीक्षा में एक दिव्यांग लड़की ने सर्वोच्च स्थान हासिल कर देश के समक्ष नारी वर्ग की योग्यता का मानक स्थापित किया है। चिकित्सा क्षेत्र, कविता, लेखन का क्षेत्र, राजनीति का क्षेत्र, वैज्ञानिकपरख के अतिरिक्त फौज में भी फाइटर पायलट जैसे पदों पर भारत की बालायें अपने को सक्षम सिद्ध कर रही है। यह हमारे लिये गौरव की बात है। नारी को केवल घर, परिवार, बच्चों एवं पति की परवरिश, देखभाल, जिम्मेदारी तक ही अब सीमित नहीं किया जा सकता। न तो देश की स्थिति-परिस्थिति से इन्हें अनभिज्ञ ही रखा जा सकता है। मजहबी उन्मादियों को सीख देते हुए एवं समाज में अमन चैन हेतु मोहतरमा एकता बेगम कहती हैं। **कोई घनश्याम कहता है, कोई रहमान कहता है जो पीड़ा सूर सहता है वही रसखान सहता है लगाते क्यों धरम की आग यूँ यारों हमारे खून की धारा में हिन्दुस्तान बहता है।**

समय काल के साथ महिलाओं में आपसी समझ, जिम्मेदारी एवं दायित्व बोझ की क्षमता बढ़ी है। इस प्रकार पंचभूत एवं पच्चीसों प्रकृति से युक्त हमारे बीच, हमारे उद्भव की जननी, नारी शक्ति का सम्मान वास्तव में समाज का विकास होगा एवं सही अर्थों में हम अघोरेश्वर के अनुयायी होकर स्वयं तथा अपने आने वाली पीढ़ियों को धन्य बनायेंगे।

निर्वाण दिवस

परम आदरणीया माँ मैत्रायिनी योगिनी के निर्वाण दिवस पर समस्त श्रद्धालुओं, माताओं, अघोर पथिकों की ओर से परम पूज्यनीया माता जी के चरणों में कोटिशः नमन वन्दन।

परम पूज्यनीया माँ मैत्रायिणी योगिनी जी का निर्वाण दिवस प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 13 जनवरी 2016 ई0 दिन बुधवार को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। प्रातः आरती-पूजन के पश्चात् प्रसाद वितरण एवं रात्रि में भव्य भंडारा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अघोराचार्य बाबा कीनाराम की जन्मस्थली रामगढ़, जिला-चंदौली, परमपूज्य भगवान अवधूत राम जी के जन्मस्थली ग्राम-गुण्डी, जिला-भोजपुर (बिहार) में भी उपरोक्त समारोह श्रद्धा भक्तिपूर्वक मनाया गया एवं जरूरतमंदों के मध्य कम्बल का वितरण किया गया।

इस अवसर पर विपुल संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित हुए।

नेत्र चिकित्सा शिविर

अघोराचार्य बाबा कीनाराम जन्मस्थली आश्रम रामगढ़, चंदौली में दिनांक **12 जनवरी 2016** को एक भव्य नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। दूर दराज ग्रामीण इलाकों से आये नेत्र पीड़ित रोगियों का नेत्र विशेषज्ञों द्वारा परीक्षण किया एवं उनमें से लगभग 90 रोगियों को मोतियाबिन्द के शल्य चिकित्सा हेतु चिह्नित किया गया। वरिष्ठ चिकित्सकों की देखरेख में शल्य चिकित्सा का कार्य सम्पन्न किये जाने हेतु तिथि निर्धारित कर जरूरतमंदों को अवगत कराया गया।

शोक संदेश

अघोरपीठ बाबा कीनाराम स्थल क्रीं कुण्ड, वाराणसी के अनन्य भक्त अघोरनिष्ठ श्री धनन्जय जी के बड़े भाई श्री सुनील सिंह की धर्मपत्नी गीता देवी निवासिनी ग्राम-करूप, जिला-रोहतास (बिहार) का शिव-सायुज्य दिनांक 08/01/2016 दिन शुक्रवार को हो गया।

पूज्य अघोरेश्वर हुतात्मा को शान्ति प्रदान करने के साथ शोक संतप्त परिवार को संबल प्रदान करें।

चतुर्थ पृष्ठ का शेष

मंत्र रूपी बीज के अंकुरण हेतु वातावरण निर्मित करें

ताप-हरण होता है। माला के माध्यम से चित्त की चंचलता समाप्त होगी और तब चित्त एकाग्र होगा, स्थिर होगा। एक व्यक्ति था जिसने एक महात्मा से कुछ माँगा। उसने मन्त्र पाया और मन्त्र जाप कर अपने ईष्ट को प्राप्त किया। उसके सहारे वह जो कुछ भी माँगता था मिल जाता था। जब उसकी सभी इच्छाएँ पूरी हो गयीं और माँगने के लिये कुछ नहीं रहा तब ईष्ट ने कहा काम दो अन्याथा मैं तुझे मार डालूँगा। उसने महात्मा जी से इस समस्या का उपाय पूछा। महात्मा जी ने कहा कि एक बाँस गाड़ दो और अपने ईष्ट से कहो कि उस पेड़ पर चढ़ते उतरते रहें। अन्त में थक कर एक दिन उसके ईष्ट ने हाथ जोड़कर कहा कि कोई दूसरा काम दो। सुमित्रों! यह मन बड़ा चंचल होता है, इसी को वश में करने के लिए माला घुमाते हैं। मन रूपी प्रेत पर माला जाप नियंत्रण करता है। मंत्र स्वयं सिद्ध होता है। ''अनमिल आखर मंत्र न जापू, प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।'' साँढ-बैल आदि खास नाम से पुकारने पर आते हैं किन्तु उस नाम के साथ मंत्र भी होता है। जाप के समय जब आसन का त्रिकोण बनता है त मंत्र के देवता उपस्थित होते हैं। वह मन को तापरहित कर देते हैं। तब जीवन रमणीय और सराहनीय हो जाता है और मुदिता को प्राप्त करता है। गुरु से या अन्यथा उपलब्ध मंत्र या ईष्ट द्वारा दिये गये संकेत के आदर्श को अंगीकार कर साधक अपने में वीर हुए हैं। यदि आप सीधा (टेढ़े-मेढ़े नहीं हैं) तो आपका मंत्र निश्चित रूप से अंकुरेगा और बाद में दूसरों को भी सुख प्रदान करेगा। यही उस महामाया की अनुभूति करने सदृश होता है। हमारे जीवन का जो मूल्यवान समय है उसे हम दूसरों की निन्दा के प्रचार-प्रसार में व्यर्थ गँवा देते हैं जिससे जीवन, मन और चित्त कलुषित हो जाते हैं और इन्द्रियाँ धोखा देने लगती हैं।

जीवन में 40-60 हजार बार भोजन करने वालों का जीवन उससे भी कम दिनों का होता है, उससे अधिक नहीं। जन्म ही मृत्यु का कारण है, यह निश्चित है। अतः महामाया की शरण में जाकर इस प्रकार के अपराध से बचना चाहिये। महामाया वही प्राण हैं जो सबमें विद्यमान हैं। प्राण के न रहने पर सभी मिलकर शरीर को गाड़कर या जलाकर नष्ट कर देते हैं तो जीवन का मूल्य समझकर जो थोड़ा सा समय बचा है उसे महामाया की शरण में व्यतीत करना चाहिये। ऐसे व्यक्ति को कैसा होना चाहिये? जिस प्रकार से तालाब में जल के आने और बाहर जाने, दोनों का मार्ग होना चाहिये। क्योंकि सिर्फ जाने का ही मार्ग खुला छोड़ दिया जायेगा तो तालाब सूख जायेगा और जिस तालाब से जल के निकास का का मार्ग बन्द कर जल के आने का मार्ग खोल दिया जाता है तो उसका जल शुद्ध और पवित्र होता है और उसमें बहुत से प्राणी बसेरा कर लेते हैं तो हमारे जीवन में भी ऐसा ही हो। यदि हम कुकृत्य में लगे रहेंगे तो जाने वाला रास्ता खुल जायेगा और आने वाला मार्ग अवरुद्ध हो जायेगा। ऐसे व्यक्ति की सभी लोग उपेक्षा करते हैं।

आप अपने को धोखा न दें, अपने पर दया करें

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

जिन महापुरुषों की छत्रछाया में आज यहाँ हम चिन्तन कर रहे हैं उनकी एक कुबड़ी थी जिसको ठोंकने से जूनागढ़ के नवाब के जेल की चक्कियाँ चलने लगीं। उन महात्मा के पास चटाई, कमण्डल और कुबड़ी के सिवाय कुछ नहीं था। ऐसे व्यक्ति क्रूरता और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह नहीं करेंगे तो कौन करेगा? जो धन, सामान बटोरने में लगे हैं वे ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें अपना धन छिन जाने का भय बना रहता है।

दुसह-कर्म, लूट-खसोट, हिंसा अपराध के कर्म को जो हम करते हैं, उन कृत्यों को ईश्वर आकाश और वायु के सदृश्य देखते हैं। इसलिए सज्जन, श्रद्धालु, भक्तजन इनसे बचने का प्रयत्न करते हैं। नशीले पदार्थों का सेवन, जिससे मनुष्य का मस्तिष्क विकृत होता है, ऐसे अपराध कर्मों में ही आता है जिसे कुछ लोग पूज्य बाबा कीनाराम और उनकी परपम्परा के शिष्यों की दिनचर्या से जोड़ते हैं। पूज्य बाबा ने कहा कि "उस परम्परा का कोई सच्च साधक, सन्त आज के देशकाल की परिस्थितियों में ऐसी त्याज्य वस्तुओं का सेवन नहीं करेगा और जो लोग इन वस्तुओं का सेवन कर रहे हैं वे किसी भी प्रकार से इस परम्परा से सम्बन्धित नहीं हो सकते हैं।

सच्चे भाव से जो हम इन महापुरुषों की छत्रछाया में संकल्प लेते हैं, वह अवश्य पूरा होता है, मगर दुर्बल मनुष्य संकल्प नहीं करता है। वह इच्छा करता है। सच्चे साधक संकल्प करते हैं कि उन महापुरुषों के आचरण को अपनायेंगे और किसी भी परिस्थिति में उससे विमुख नहीं होंगे। मगर जो वामांगना, नितम्बना के उपासक हैं वह ललिता के उपासक नहीं हो सकते। ललिता कोई दीगर वस्तु नहीं होती बल्कि जो उपासक हैं उनकी वाणी इतनी ललित होती है जिससे दूसरे सहज ही पिघल जाते हैं। कर्कश वाणी का वे प्रयोग नहीं करते। जो वागेश्वरी के उपासक हैं, उनकी वाणी से नहीं निकलता है कि हम ऐसा करें, वैसा करें। उनका चुप रहना ही, कुंठित रहना ही बहुत बड़ा अंकुर होता है। जो दिन रात यह सोचते रहते हैं कि कैसा खानपान रखें, कैसा पहनावा रखें कि दूसरों को प्रभावति कर सकें, वे कब तक समाज को धोखा देते रहेंगे?

आज मनुष्य राम, कृष्ण, शिव, साधु और महात्माओं का ध्यान तो करते हैं किन्तु क्या वे कभी अपना भी ध्यान करते हैं? मनुष्य जब तक स्वयं अपने प्रति दया नहीं करेगा अपने को गंदगी में गिरने से रोकने का प्रयास नहीं करेगा तब तक उसकी सभी पूजा अर्चना निरर्थक है।

यहाँ जो हम योगेश्वर की महास्थली में, उनकी समाधि के पास बैठकर जो चिन्तन कर रहे हैं और जो कुछ कर्म किये हैं, वह निरर्थक नहीं जायेगा। हम चक्षु, श्रवण और वाणी दोष तथा एक दूसरे से टकराने से बचें तो इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। नहीं तो जो उपासक वाणी के माध्यम से कुछ चाहता है तो उसे संकल्प नहीं कहते। जो संकल्प करता है पूर्ण रूप से संकल्प करता है, इच्छा नहीं करता है। शैतान भी इंसान की शक्ल में होता है किन्तु उसकी पहचान उसके कृत्यों से होती है। बुरी आदतों की दवा केवल मौत होती है। हमारे जिन कार्यों से समाज को, नजदीकी लोगों को कष्ट होता है, उन कृत्यों को हमें छोड़ना चाहिए। मन, वचन, कर्म से हम अपने आपको धोधा न दें, अपने पर दया करें। यही कल्याण का मार्ग हो सकता है। आज जिस महापुरुष की छत्रछाया में हम यहाँ एकत्रित हुए हैं, वे हमारे राष्ट्र तथा समाज को अच्छी प्रेरणा दें ताकि किसी के प्रति हममें ईर्ष्या, द्वेष व घृणा न रहे। सभी एक दूसरे से स्नेह करें। हमारे देश में जो नये-नये कुविचार फैल रहे हैं, उन्हें दूर करें, यही उनसे प्रार्थना है।

किसी का साथ उसका कुलशील अच्छी तरह जानकर ही करना चाहिए। यदि आप केवल कुल को ही जानते हैं, उसके आचरण को नहीं जानते हैं तो वह आपको ले जाकर कहीं फँसा सकता हैं जिससे अपने स्वास्थ्य, अर्थ की हानि होती है और समाज में पीछे, मुँह छिपाकर बैठना पड़ता है। इसके साथ ही इस बात पर भी गौर करना चाहिए कि यदि हमारे बाप, दादा चोरी करते रहे हैं तो हम भी चोरी करें? हम और आप यदि कत्ल करते हैं तो जेल जाते है सजा पाते हैं, मगर एक सैनिक हजारों हजार शत्रुओं का कत्ल करता है तो देश और समाज उसका स्वागत करता है, उसे देवता सदृश मानता है।

वह करते थे तो हम करें ऐसा नहीं मान लेना चाहिए यदि ऐसा विचार और आचरण है तो किसी मंदिर या पवित्र स्थल पर जाने का महत्व नहीं होता है। क्रिया एक ही है पर उसका प्रभाव भिन्न-भिन्न होता है। इसी तरह साधुताई की कोई खास विशेषता नहीं। मन, कर्म और वचन से न हम अपने को धोखा दें और न दूसरों को गलत प्रेरणा दें, तो ऐसा मनुष्य जब किसी महापुरुष की पवित्र-स्थली पर या सामाजिक पवित्र-स्थल या मन्दिर पर झुकता है तो उसका झुकना महान धनुष कमान होता है। जिससे बाण का सधान कर वह समाज के दुःख, क्लेश की मिटा सकता है।

मंत्र रूपी बीज के अंकुरण हेतु वातावरण निर्मित करें

धर्म बन्धुओं!

बहुत से लोग दूसरे की सम्पत्ति के अपहरण, दूसरों की निन्दा करने में लगे हुए हैं। इन कुकृत्यों से अपने को विमुक्त कर महामाया या उसके साधकों या श्रद्धालुओं के चरणों में जो सेवा निवेदित करता है वही सौभाग्यशाली है। सच्चाई तो सच्चाई है उसको कहाँ तक छिपाया जा सकता है? महामाया के दरबार में अपराध क्षम्य नहीं होता है। किन्तु सज्जन हैं, छोटापन छोड़ने का संकल्प लेते हैं तो उनका अपराध उसी क्षण क्षमा हो जाता है। जो बार-बार कुकृत्य करता है, दूसरों की अपेक्षा में रत है ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि में जल रहा है, जलता सी दीख रहा है तो उस पर महामाया की कृपा कैसे होगी? इसी जीवन में नरक है। बहुत से लोगों के शरीर से, उनके अपने ही कृत्यों के परिणामस्वरूप पीब-खून निकलता रहता है। महामाया का एक माला भी स्मरण बहुत कुछ सफलता की ओर ले जाता है किन्तु यदि हम छल कपट छोड़कर आराधना नहीं करते हैं तो दया, करुणा और मैत्री जो महामाया का स्वभाव है, नहीं मिलती है। हमलोग उनकी मैत्री कहाँ चाहते हैं जब हमलोग अच्छे और मांगलिक कार्यों में लगेंगे तभी वह भी हमारे बारे में सोचेंगी। यदि हम स्वयं अपने को गर्त में डालने का प्रयत्न करते हैं, कुकर्म में प्रवृत्त रहते हैं तो इससे हमारा जीवन खराब ही होगा। ऐसे व्यक्ति का मानसिक सन्ताप और जलन पुत्र-स्त्री आदि भी नहीं बाँट सकते। यह तो उसके स्वयं के कर्म का फल है जिसका भुक्तभोगी उसे खुद होना पड़ेगा। जब हमारा चित्त शुद्ध होगा तभी मंत्र-जाप का प्रभाव होगा। बट का बीज बहुत ही छोटा होता है किन्तु उससे उत्पन्न बट वृक्ष बहुत ही विशाल होता है जो कि दूसरों को छाया देता है, उनका ताप हरण करता है। भगवती का बीज-मंत्र बहुत छोटा होता है, अंकुरित होता है, अंकुरित होने पर उसका प्रभाव अत्यन्त ही व्यापक और सार्वभौमिक होता है, परन्तु इसको उपलब्ध करने के लिए सीधा-सम होना पड़ेगा। यदि संदेह बना रहेगा और चारों ओर से मेड़ बाँधकर रहेंगे, पानी के आने जाने का रास्ता नहीं रखेंगे तो वह बीज अंकुरित नहीं होगा। यदि आने वाले पानी के लिये मार्ग न बनाकर सिर्फ जाने का ही मार्ग छोड़ दिया जाये तब भी वह बीज नहीं अंकुरेगा। मन एवं काया की दुष्टता को निकालने का मार्ग खोल देना होगा तभी बीज मंत्र का अंकुर जम पायेगा। वृक्ष के पत्ते अच्छी संज्ञा प्राप्त करते हैं उसका फल-फूल उसका प्राण होता है, जो अपने प्राण की उपेक्षा करता है वह शुष्य हो ही जायेगा। ऐसे प्राणी का चित्त निर्बल होगा। उसे एकान्त चित्तता नहीं प्राप्त होगी। इसलिये उसके नीचे रहने वाले प्राणी सुख नहीं पाते, सभी दुःखी एवं क्षुब्ध रहते हैं। वह स्वयं भी दुःख पाता है, उसके मन-मस्तिष्क में कलुषित विचार उत्पन्न होते हैं। उसकी काया कुकृत्य की ओर अग्रसर होती है। इसलिये जिस प्रकार मुर्गी अपने अण्डे को सेकर गर्मी पहुँचाती है उसी तरह से हम नवरात्र व्रत के बीज मंत्र को से रहे हैं, ताकि सबके कल्याण के लिए और अपने कल्याण के लिए भी प्राणमयी भगवती का उदय हो। हम जो चैतन्य होकर मंत्र, जो बीज रूप है उसका माला पर ध्यान या स्मृति से, स्मरण करते हैं तो वह मुर्गी के अण्डे को गर्मी पहुँचाने के सदृश होता है। इससे बहुतेरे प्राणियों को सुख-सुविधा प्राप्त होती है और उनका

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

☞ तू नम्र बन। सभी प्राणियों के सामने सुमधुर वाणी का उच्चारण कर।

☞ तू थोड़ा संभल। भाग-दौड़, चंचलता और दूसरों के साथ वाद-विवाद को प्रश्रय देने वाला न बन।

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी